शोध मंथन Vol. 9 No.3 Month Sept.2018 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 5.463 (SJIF)
U G C Approved Journal No.40908

सूफी संगीत में आध्यात्मिकता

डॉ० शम्पा चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
संगीत विभाग, वी0एम0एल0जी0 कॉलेज, गाजियाबाद
ईमेलः *shampa1410@gmail.com*

सारांश

भारतीय संस्कृति एंव सभ्यता अति प्राचीन तथा गरिमामयी रही है। यह संस्कृति एक ऐसा सिन्धु हैं जिसमे विभिन्न संस्कृतियों की नदियाँ आकर मिली है और विरासत रूपि महासागर में विलीन होती गई है। भारतीय संस्कृति को सदैव ही शीर्ष स्थान पर आसीन किया गया है जिसका प्रमाण अति प्राचीन वेदो में भी प्राप्त होते हैं। भारतीय संस्कृति में ''संगीत'' को पवित्र मानकर धर्मबद्ध करते हुए मोक्ष प्राप्ति का एक उत्तम साधन माना गया है। मनुष्य के जीवन में आंनद प्राप्ति के अतिरिक्त यदि कोई उद्देश्य है तो वह है ईश्वर की अराधना अर्थात ईश्वर की भक्ति के मार्ग पर अग्रसर होकर जीवन काल के पश्चात मोह की चाह करना। इस मार्ग की प्राप्ति का मुख्य माध्यम विश्व के सभी धर्मों में निर्विरोध रूप से संगीत रहा है। भक्ति संगीत की चर्चा होते ही जिस संगीत की छवि स्वतः ही प्रस्फूटित होती है वह है 'सूफी संगीत'। प्रस्तुत शोध पत्र में सर्वधर्म समभाव का प्रतीक सूफी संगीत एवं इसके द्वारा लौकिक प्रेम को माध्यम बनाकर अलौकिक प्रेम की प्राप्ति एवं इसमें निहित आध्यात्मिक प्रेम और सौहार्द के विषय में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द

आध्यात्म, लौकिक प्रेम, अलौकिक प्रेम, कव्वाली, प्रेम, भक्ति, सूफियाना संगीत

शोध पत्र

संगीत आनन्द का श्रोत है, आनन्द ईश्वर का स्वरूप है, इससे साधक एवं साध्य दोनों को ही सुख की प्राप्ति होती है। संगीत की स्वर लहरियाँ मानव काया संस्थान, मन संस्थान और भाव संस्थान तीनों को ही तरंगित करती है। संगीत आत्मा के लिए ठीक उसी प्रकार जरूरी है जिस तरह शरीर के लिए व्यायाम। संगीत किसी भी देश, सम्प्रदाय विशेष का क्यों न हो उसका एकमात्र उद्देश्य आत्मा का आनन्द ही होता है। यह आनन्द लौकिक से पारलौकिक में परिणत हो जाता है। संगीत को आत्मदर्शन के सर्वोत्तम साधन को संसार के सभी धर्मों ने स्वीकार किया है। संसार के अनेकों सूफी, संत–महात्माओं ने संगीत के द्वारा भक्ति रस का पान किया है। साथ ही परमात्मा को प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर हुए हैं।

सूफी संगीत से एक रुहानी संगीत का बोध होता है, जिसमें ईश्वरीय अनुराग और रहस्यवादी रूपकों एवं बिम्बों की भरमार एवं गुरू के प्रति शिष्यों का गहरा प्रेम होता है। इसके माध्यम से खुदा की इबादत की जाती है, जो सूफियों की भक्तिभावना का द्योतक है। मध्यकालीन

इतिहास के 11वीं शताब्दी के आसपास सूफी भारत आए। वे उस समय भारत की शिक्षा, दर्शन, संगीत व भक्ति भावनाओं से प्रभावित हुए।

सूफी सन्तों ने अपने आदर्शों, सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के लिए संगीत को माध्यम के रूप में चुना। संगीत ही वास्तव में एक ऐसा साधन था, जो परस्पर हर समुदाय को निकट लाने व प्रेम–सौहार्द की भावना में बांधे रख सकता था। यही कारण था कि सूफियों ने तत्कालीन संगीत के कई तत्वों को आत्मसात कर दोनों ही संस्कृतियों के सम्मिश्रण से निर्मित एक नवीन 'सूफियाना संगीत' को जन्म दिया। सूफियों के द्वारा प्रयुक्त संगीत को 'समा' कहा गया। समा अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है पढ़ना तथा सामूहिक रूप से ईश्वर के नामों की जाप करना। इनका मानना था कि जब ये समा करते है तो उससे एक प्रकार के आनन्द की अभिव्यक्ति होती है। धीरे–धीरे वो आनन्द के अतिरेक में पहुँच जाते हैं और आनन्द की पराकाष्ठा पर पहुँचकर ईश्वर को प्राप्त कर लेते है। धीरे–धीरे इसमें परिवर्तन हुआ, हज़रत मोहम्मद की प्रशंसा में गीत गाए जाने लगे। सामूहिक नृत्य भी होने लगे एवं कुछ वाद्यों का भी उपयोग होने लगा। जिस कारण धर्माचार्यों द्वारा इसकी आलोचना होने लगी। इस प्रकार 'समा' में गाए जाने वाली गायन शैलियाँ तत्कालीन गायन के मूल प्राण प्रबन्ध गायन पद्धति को समझ नहीं पाये तथापि भारतीय संगीत की स्वरावलियों ने उन्हें आकर्षित किया। इसी कारणवश उन्होंने अरबी, फारसी दोनों का सम्मिश्रण कर कौल, कल्बाना, नक्श–गुल, कव्वाली गजल, तराना आदि का चित्रण किया। कव्वाली सूफियाना संगीत की विशेष गायकी है। इसकी मुख्य विशेषता अरबी, फारसी, ईरानी एवं भारतीय संगीत का मिश्रण है। परमात्मा की प्रशंसा या उसकी शान में गाना अथवा विरहावस्था में उसका स्मरण करना कव्वाली की द्वारा सम्पन्न होता है। कव्वाली का मूलरूप अध्यात्म को स्पर्श करता है तथा यह समा का ही रूप है।

सूफी शब्द की उत्पत्ति कब और कहाँ से हुई इस पर विभिन्न विद्वानों में मतभेद है, उनके अपने–अपने मत अनेक संकल्पनाओं को जन्म देते हैं। इस प्रकार यदि संक्षेप में कहें तो मध्यकाल में जिस तरह हिन्दुओं में भक्ति आन्दोलन की शुरूआत हुई, उसी प्रकार इस्लाम में प्रेम, अहिंसा, गुरू–प्रेम, भक्ति–भावना की प्रबलता के आधार पर सूफीवाद का जन्म हुआ। सूफी शब्द का उद्‌भव तीन शब्दों से माना गया है–

सफा अर्थात् पवित्र
सूफ अर्थात् ऊन
सोफिया अर्थात् ज्ञान

कुछ विद्वानों का मत है कि जो संत ऊनी कपड़े पहनकर अपने मत का प्रचार करते थे, वे सूफी कहलाए। लेकिन सूफी वे नहीं हैं जो केवल ऊनी वस्त्र पहनकर अपने मत का प्रचार–प्रसार करते हैं बल्कि वे हैं जिनका हृदय सच्चा व पवित्र है, वे ईश्वर में विश्वास करते हैं। अतः पवित्रता, सूफीवाद का वैचारिक गुण है।

भारत में सूफी मुख्यतः चार शाखाओं/सम्प्रदायों में विभाजित हुए जिनमें चिश्ती, सुहरावर्ती, कादिरी और नक्शबन्दी प्रमुख हैं। इन चारों सूफी शाखाओं का विस्तार 1200ई0 से लेकर 1500ई0 तक धीरे–धीरे हुआ।

सूफीवाद ने भारतीय संगीत को गहराई से प्रभावित किया। विशेष रूप से कव्वाली के विकास के साथ। कव्वाली जो एक भक्ति संगीत का रूप है, इसकी उत्पत्ति सूफी समा (संगीत सभाओं) से हुई थी। सूफी कव्वाली के गीत ईश्वरीय प्रेम, पीड़ा ओर लालसा के विषयों पर केन्द्रित थी।

आध्यात्मिक पक्ष की यदि बात करें तो कव्वाली अपने स्वर ताल के वेग द्वारा आकाश को छू लेती है उसी प्रकार फकीर लोग अल्लाह के मिलाप के लिए अपना सफर तय करते हैं। एक शिष्य अपने गुरू या खुदाबन्द करीम के सामने ही सजदा करता है। उसके आन्तरिक संवेग व रूह द्वारा वह अल्लाह को याद करता है, इस कव्वाली में खुदा के गुणों व एक मुरीद की इबादत का वर्णन इस प्रकार से है–

'वह सजदा क्या, रहे अहसास जिसमें सर उठाने का,
कि बंदगी–ए–बकैदे होध तौहीने इबादत है
सजदों से गुरेज़ न कर रे जबींफरोश
सजदों में सिर देके देख इबादत है।'2

सूफी संगीत में कव्वाली के इलावा अन्य गायन शैलियाँ भी इस प्रकार से है–नाअत, मधा, हदीस, धनाल, मनकबत, रंग हमद, कलवाना, सलाम, नक्श–ए–गुल, नक्श–ए–निगार एवं वसीत आदि। ऐसा माना जाता है कि इन गायन शैलियों का आविष्कार अमीर खुसरो ने किया। यह गायन शैलियाँ कव्वाली का ही अभिन्न अंग हैं। जब कव्वाली की महफिल होती है तब कव्वाल पीरों फकीरों की खानकाहों में इनका गायन होता है। इन शैलियों का सूफी सिलसिलों में विशेष स्थान है।

सूफीवाद में 'इश्क' ईश्वरीय प्रेम, भक्ति के विरह (ईश्वर के लिए तड़प) को दर्शाता है। सूफी कविताएँ मुख्यतः पंजाबी, उर्दू, हिंदवी (आधुनिक हिन्दी और उर्दू की पूर्ववर्ती) भाषाओं में लिखी गई। बुल्ले शाह, शाह हुसैन और सुल्तान बाहू जैसे सूफी कवियों की रहस्यवादी कविताएँ आज भी उल्लेखनीय और प्रसिद्ध है।

सूफी मत के स्वरूप के विषय में कहा गया है कि–

"In Sufism all duality is melted into unity in the fires of introspection. Beauty leads to love and love to bliss. The Sufis search for "Absolute Beauty, Absolute Love and Absolute Bliss."1

सूफी दर्शन एवं भारतीय वैदिक चिन्तन धारा के मध्य बहुत समानता दिखाई देती है। भारतीय वेदान्त के अद्वैतवाद, विशिष्टताद्वैत आदि दर्शन के सिद्धान्तों एवं सूफी विचारों में अत्यधिक साम्यता दिखती है। इब्तुल अरबी परमात्मा के बारे में कहते है 'हमावस्तु' अर्थात् सब कुछ वही है। जिसके सम्बन्ध में कुरान की आयत भी कहती है–'इन्नाखिलाह' और 'इन्नाइल्लैहे राजयून' अर्थात् हम परमात्मा से पैदा हुए हैं एवं परमात्मा में ही लौट जायेंगे।

'सूफियों में साधना की चार अवस्थाएँ मानी गई हैं–यथा शरीयत, तरीकत, हकीकत एवं मारिफत।'4 इसके उपरान्त गुरू के उपदेश के माध्यम से जगत की मिथ्या होने का ज्ञान होने पर जागरण की स्थिति कहते हैं। परमात्मा से एकात्मता स्थापित करने हेतु शुद्ध चेतन की जरूरत होती है, इसके लिए आवश्यक है कि सांसारिक वासनाओं का त्याग किया जाए। अतः शुद्धीकरण के लिए सूफी साधना में अनेक प्रकार के नियम हैं जिनमें–तौबा, खौफ, तवक्कुल, फकर, सब्र, रज़ा, रिज़ा, शुप्त आदि स्थितियाँ आती हैं। चौथी स्थिति प्रकाशानुभव की स्थिति है। जिसमें साधक को साध्य की अनुभूति होती है। सत्ता से पूर्ण एकात्म स्थापित करने हेतु साधक को सांसारिक विघ्नों से एक बार फिर संघर्ष करना पड़ता है। पूर्ण ऐक्य की स्थिति में साधक, साध्य से पूर्ण एकात्मता स्थिापित करता है।

सूफी परम्परा से जुड़े सन्तों ने साधनागत, सांगीतिक परम्परा का निर्वाह करते हुए देश, समाज, धर्म की महत्वपूर्ण सेवा की। इन सूफी फकीरों ने भारत में इस्लाम धर्म का प्रचार ईरानी संगीत पद्धति को अपनाकर जनभाशा के द्वारा किया। इनकी अधिकांश रचनाएँ फारसी साहित्य से प्रभावित हुई हैं। इसीलिए उनकी रचनाओं एवं कविताओं में साक़ी, माशूक, जुल्फ, रुख, चश्म, खुम आदि शब्द प्रयोग में आते हैं। फैज कशनी ने 'रिसाल–यी–मिशबक' में इस प्रकार के कुछ शब्दों एवं उनके सांकेतिक अर्थ दिए–

रूख– चेहरा (परम सत्य की अभिव्यक्ति)
जुल्म– (परम सत्य को छुपाने वाला दृष्यमान जगत् स्वरूप पर्दा)
चश्म– आँखे (परमात्मा को अपने दासों एवं उनके रूझान को देखना)
खत– कपोत में बनने वाला गड्ढा (आध्यात्मिक स्वरूपों में परम सत्य की अभिव्यक्ति)
खुम– परमात्मा के गुणों को प्रकट करता है। इत्यादि।

डॉ0 ताराचन्द्र के अनुसार– 'सूफीवाद प्रगाढ़ भक्ति का धर्म है, प्रेम इसका भाव है, कविता, संगीत एवं नृत्य इसकी आराधना है तथा परमात्मा में विलीन हो जाना इसका आदर्श है।'6

निष्कर्ष

इस प्रकार जीवात्मा एवं परमात्मा के प्रेम पर आधारित एक ऐसी अवस्था जो आत्मा से परमात्मा का मिलन कराती हो, सूफी परंपरा है। इसी आधार पर सूफी की परम्परा मूलरूप से प्रेम भावना पर आधारित थी। प्रेम को इश्क की संज्ञा देकर दो तरह के प्रेम– 'इश्के मिजाजी' अर्थात् सांसारिक प्रेम' व 'इश्के हकीकी' अर्थात् ईश्वर प्रेम कहा गया। इसकी 'इश्के हकीकी' के माध्यम से ईश्वर तक सरलता से पहुँचा जा सकता है। चूँकि सूफी इस्लाम का एक अंग तो है ही, परन्तु इसका आध्यात्मिक रूप से इतना प्रचार–प्रसार हुआ कि इसको सभी धर्मों ने अपनाया और ईश्वर को अलग–अलग धर्मों में भिन्न–भिन्न नाम जैसे– सजन, प्रिया, अल्लाह, मौला आदि नामों से उनकी आराधना करने लगे।

अध्यात्म, प्रेम तथा सौहार्द ही सूफी की विशेषता है। सूफी परंपरा लौकिक प्रेम को माध्यम बनाकर अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना करती है। इस हेतु सूफियों ने स्थानीय भाषा और संस्कृति को अपनाकर अपने सिद्धांतों आम जनता तक 'संगीत' के माध्यम से प्रेषित किया। इसी के प्रतिपादन में सूफी संगीत एक सशक्त माध्यम सिद्ध हुई। ईश्वरीय सत्ता का प्रेम के माध्यम से अनुभूति करने का सफल प्रयास 'सूफी संगीत' द्वारा किया गया।

सन्दर्भ

1. शर्मा, डॉ0 सुनीता, भारतीय संगीत का इतिहास, संजय प्रकाशन, दिल्ली
पृ0 सं0–105
2. गर्ग, लक्ष्मी नारायण, कव्वाली अंक, जनवरी–फरवरी, संगीत कार्यालय, हाथरस
पृ0 सं0–47
3. दीक्षित, डॉ0 रश्मि, मध्यकालकृत, अनुभव प्रकाशन, प्रयागराज
पृ0 सं0–222
4. कुमार, डॉ0 अशोक, भारतीय संगीत का इतिहास, के.के. पब्लिकेशन्स, दिल्ली
पृ0 सं0–443
5. वर्मा, डॉ0 राजीव, भारतीय संगीत और अमीर खुसरो, विशु ग्राफिक्स एण्ड प्रिन्टर्स, दिल्ली
पृ0 सं0–24
6. तिवारी, रामपूजन, सूफीमत साधना और साहित्य, ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी,
पृ0 सं0–96
7. माथुर, डॉ0 राकेश, सूफी संगीता का शैलीगत सौन्दर्य, राजस्थानी ग्रंथसागर, जोधपुर।